संस्कृत

अनुवाद शिक्षण विधयः

अनुवाद शिक्षण

अनुवाद -

किसी भाषा में कही या लिखी गयी बात का किसी दूसरी भाषा में सार्थक परिवर्तन अनुवाद (Translation) कहलाता है।

उद्देश्यम् – द्विभाषाज्ञानम्

- दो भाषाओँ का बोध व व्याकरण का ज्ञान
- अनुवाद मातृभाषा से संस्कृत भाषा में हो सकता है, संस्कृत भाषा से मातृभाषा में हो सकता है या अन्य किसी भाषा में भी हो सकता है

अनुवाद शिक्षण

- अनुवाद मुख्य रूप से तीन प्रकार का होता है -
  - शब्दानुवाद
  - छायानुवाद या भावानुवाद
  - तथ्यानुवाद

अनुवाद प्रकार

- शब्दानुवाद
- छायानुवाद या भावानुवाद
- तथ्यानुवाद

- अक्षरशः अनुवाद/शब्दानुवाद
- इस प्रकार के अनुवाद में वाक्य को महत्व नहीं देकर के शब्दों या अक्षरों को महत्व दिया जाता है।
- स्रोतभाषा के प्रत्येक शब्द का लक्ष्यभाषा के प्रत्येक शब्द में यथावत् अनुवादन को शब्दानुवाद कहते हैं।
- अनुवाद करते समय शब्द के स्थान पर उसके समान अर्थ वाले दूसरे शब्द का प्रयोग किया जाता है।

अनुवाद प्रकार

- शब्दानुवाद
- छायानुवाद या भावानुवाद
- तथ्यानुवाद

प्रस्तुत अनुच्छेद के भावों के अनुसार अनुवाद होता है।
इसमें वाक्यों का अनुवाद होता है।
विषय वस्तु का अनुवाद करने के लिए उसके भावार्थ को अनुवाद के रूप में अन्य भाषा में प्रस्तुत किया जाता है।
इसमें भावभिव्यक्ति पर बल दिया जाता है।

अनुवाद प्रकार

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

- शब्दानुवाद
- छायानुवाद या भावानुवाद
- तथ्यानुवाद

इसका दूसरा नाम अर्थानुवाद भी हैं।
इस तरह के अनुवाद में शब्दानुवाद के साथ भाव का मिश्रण भी कर दिया जाता हैं ।
इसमें प्रतीत होता हैं कि यह अनुवाद उसी लेखक ने किया हैं जिसने मूल अनुच्छेद लिखा हैं।

अनुवाद शिक्षण की विधियाँ

- पुस्तक विधि
- द्विभाषा विधि
- तुलना एवं अनुकरण विधि
- मातृभाषा विधि

अनुवादशिक्षणविधय:

- पुस्तक विधि
- द्विभाषा विधि
- तुलना एवं अनुकरण विधि
- मातृभाषा विधि

- विशेष पुस्तकें तैयार करके इन पुस्तकों द्वारा अनुवाद की शिक्षा दी जाती है। जैसे – रचनानुवादकौमुदी
- सरल से कठिन की ओर शिक्षण सूत्र का अनुसरण किया जाता है।

अनुवादशिक्षणविधय:

- पुस्तक विधि
- द्विभाषा विधि
- तुलना एवं अनुकरण विधि
- मातृभाषा विधि

- एक व्यक्ति मात्र भाषा में बोलता है तथा दूसरा उसका अनुवाद कर लेता है ।
- यह विधि स्कूलों के आलावा भी बड़े-बड़े औपचारिक सम्मेलनों में यह विधि काम में ली जाती है।

अनुवादशिक्षणविधयः

- पुस्तक विधि
- द्विभाषा विधि
- तुलना एवं अनुकरण विधि
- मातृभाषा विधि

- इसमें संस्कृत वाक्य बोलकर मातृभाषा या अन्य भाषा में उसके समान भावार्थ का वाक्य बोला जाता है।
- इसमें छात्र दूसरी भाषा के वाक्यों के साथ तुलना करते हैं तथा उनके वाक्यों का अनुकरण करते हैं।

अनुवादशिक्षणविधय:

- पुस्तक विधि
- द्विभाषा विधि
- तुलना एवं अनुकरण विधि
- मातृभाषा विधि

- किसी भी भाषा को मातृभाषा का सहारा लेकर अनुवाद सिखाना मातृभाषा विधि कहलाती हैं।

अनुवाद पाठ योजना :

1. प्रस्तावना
2. उद्देश्य कथन
3. प्रस्तुतिकरण
4. मौनवाचन
5. काठिन्यनिवारण
6. मोखिक कार्य
7. श्यामपट्ट कार्य
8. संशोधन
9. समान्यीकरण
10. सिधान्त निरूपण
11. अभ्यास कार्य
12. गृह कार्य